

थार्नडाइक के सीखने के नियम

(Thorndike's Law of Learning)

थार्नडाइक ने सीखने के सन्दर्भ में मुख्यतः तीन नियम और पाँच गैर नियम प्रतिपादित किए

4) मुख्य नियम -

(1) तत्परता का नियम: इतना नियम का अर्थ है

यह है कि यदि हम किसी कार्य को सीखने के लिए तैयार हैं तो हम उसे शीघ्र ही सीख लेते हैं। तत्परता में कार्य करने की इच्छा निर्दिष्ट रहती है। यदि बालक में जगित के प्रश्न करने की इच्छा है तो वह उसको करता है अन्यथा नहीं। इतना ही नहीं। तत्परता के कारण वह उसको अधिक शीघ्रता और कुशलता से करता है। तत्परता उसके ध्यान को कार्य पर केंद्रित करने में सहायता देती है, जिसके फलस्वरूप वह उसे सफल करने में सफल होगा।

आरिच के अनुसार - " तत्परता या किसी कार्य के लिए तैयार होना, धुड़ का आधा विषय कहलाता है। तत्परता के नियम के अनुसार शिक्षक सीखने की परिधि तैयार करता है इस परिधि के अन्दर ही बालक स्वतन्त्र हो जाता है।" तो वह सीखने में तत्पर हो जाता है।

② अभ्यास कानिष्ठ (Law of Exercise)
अभ्यास कानिष्ठ किसी विद्या को बार

बार दोहराने से इस दौरी हो

रहीम करता करता अभ्यास ले जाइ मारी होर सुजात
रसरी आवत जात है खिल परपड़त निशान

अर्थात् अभ्यास करते-करते मूर्ख भी विद्वान होजाता
-घ) बिक बैसे जैसे कुएकी जात पर बार २ रसरी के
आने जाने पर निशान पड़ जाये

① उपयोग का नियम यदि किसी कार्य बार बार
विद्या जाय अर्थात् अभ्यास विद्या जाय तो वह कभी
नहीं, अती प्रका (०) अनुप्रयोग - यदि हम सीखते हुए यदि
को सीखना चाहते हैं तो उसको भूल जाते हैं। अभ्यास के
सादर से उसको स्मरण कर सकते हैं।

③ पुभाव का नियम इन नियम के अनुसार हम उन
कार्य को सीखना चाहते हैं जिनका परिणाम

हमारे लिए हितकर होगा। या जिसमें सुख या संतोष
मिलता है या हमको किसी कार्य को करने या सीखने
में क्रम होता है। तो हम उसको करते या सीखते
मही हैं। वाशरु के अनुसार - " जब सीखने का कार्य
किसी उद्देश्य या इच्छा और साधन के लिए

होता है) तब सोपान के संतोष का प्रहस्वपूनी
रूपान होता है)

सोपानों का गौण नियम:

- ① बहुप्रतिबन्ध का नियम
- ② मने वृत्ति का नियम -
- ③ आंशिक छुट्टा का नियम -
- ④ आन्वी छुट्टा का नियम -
- ⑤ सम्बन्धित परिवर्तन का नियम -

०
